INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.428 (SJIF 2026)

राजगृह का अतीत गौतम बुद्ध के विशेष संदर्भ में
(The history of Rajagriha with special reference to Gautam Buddha)

डॉ. शक्ति प्रसाद तिवारी
सहायक प्राध्यापक,
इतिहास विभाग,
भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय,
मधेपुरा (बिहार, भारत)
E-mail: shaktiprasadtiwari@gmail.com

DOI No. 03.2021-11278686 DOI Link :: https://doi-ds.org/doilink/04.2026-97771912/IRJHIS2604023

प्रस्तावना :

बौद्ध कालीन भारत में राजगृह की गणना एक वैभवशाली नगर के रूप में होती है। प्राचीन राजगृह का वर्णन रामायण, महाभारत तथा अन्य कई प्राचीन ग्रंथो में भी किया गया है। इन धर्मग्रन्थों को पढ़ने से ज्ञात होता है कि या नगर अपने प्राकृतिक सौंदर्य तथा वैभव के कारण कई शताब्दियों तक भारतीय नरेशों तथा सम्राटों का ध्यान अपनी और आकर्षित करता है, रामायण में बताया गया है कि ब्रह्मा के पुत्र वासु नाम पर इस नगर का नाम बासुमति पड़ा । महाभारत में वर्णन है कि राजा बृहद्रथ (सम्राट जरासंध के पिता) ने सर्वप्रथम इस नगर को अपनी राजधानी बनाई थी, इस कारण बार्हद्रथ के नाम से भी इस नगर को बार्हद्रथ के नाम से भी संबोधित किया जाता है। राजा ब्रह्मदर्थ(बृहद्रथ,ब्रह्मदत्त)के ही वंश मैं कई पीढ़ी बाद कुशाग्र नाम के राजा हुए अपने शासनकाल में राजा कुशाग्र ने अपनी राजधानी राजगृह को एक नया नाम दिया वह नाम था कुशाग्रपुरी ,राजधानी राजगृह के नाम परिवर्तन का मत था प्राचीन राजगृह में कुश नाम की घास काफी होती थी और वह देखने में लुभानी लगती थी अतएव कुश नामक घास से भारी होने के कारण इस स्थान पर कुशाग्र पूरी भी कहे जाने लगा। कारण जो भी हो पर इतना तो कहा जा सकता है कि विभिन्न राजाओं के शासनकाल में इस नगर का नाम परिवर्तन होता रहा है महाभारत में मगध सम्राट जरासंध का नाम आया है। इस सम्राट की राजधानी भी राजगृह में ही थी। जरासंध ने राजगृह की सुरक्षा का इतना सुंदर प्रबंध किया कि कोई भी अनजान व्यक्ति बिना पूर्व अनुमति प्राप्त किया इस नगर में प्रवेश नहीं कर सकता था।[1] जरासंध कुश्ती का अखाड़ा यह वह स्थान है जहाँ जरासंध अपने प्रतिद्वंदियों के साथ मल्लयुद्ध किया करते थे। लोकमत के अनुसार ,यहीं पर भगवान श्रीकृष्ण के कहने पर भीम और जरासंध के बीच चौदह दिनों तक भीषण युद्ध हुआ था, और अंत में भीम ने जरासंध का वध किया। इस मल्लयुद्ध जिसे लेकर मान्यता है कि जरासंध इस आखाड़े में भारी मात्रा में दूध और घी मिलाते थे इसलिए अखाड़े की मिट्टी का रंग आज भी सफेद और पीला दिखता है । वैभव की पहाड़ी के पास स्थित यह एक आयताकार पत्थर की संरचना है, जिसे जरासंध का विश्राम स्थल माना जाता है। जरासंध का जन्म दो अलग–अलग टुकड़ों में हुआ था, जिन्हें 'जरा' नाम की राक्षसी ने जोड़कर उन्हें जीवित किया था। उन्हीं के सम्मान में यहाँ जरा देवी का मंदिर बना है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि राजगृह नगर सिर्फ भगवान बुद्ध के समय से ही प्रसिद्ध नहीं था बल्कि उसके अतीत के इतिहास भी कभी गौरवपूर्ण था। श्री एस पाण्डेय ने अपनी पुस्तक दी हिस्टोरिकल ज्योग्राफी एंड टोपोग्राफी आफ बिहार में बताया है की पांच पहाड़िया (विपुलगिरि, रत्नागिरि, उदयगिरि, स्वर्णगिरि और वैभवगिरि) से घीरे रहने से यह नगर ग्रिरिव्रज कहलाता था और संभवतः

यही नगर का सबसे प्राचीन नाम था । अर्वाचीन राजगीर के नाम राजगृह क्यों पड़ा इसके भी कारण है।[2] राजगृह शब्द का अर्थ होता है राजा का गिरी अथवा राजा का आवास । चूँकि, यह नगर कई शताब्दियों तक कई प्रतापी नरेश हो तथा सम्राटों की राजधानी रहा था और वे नरेश तथा सम्राट इस नगर में वास करते थे अतएव इन नरेशों एवं सम्राटों के आवास संस्थान होने के कारण इस नगर को राजगिरी के नाम से पुकारा जाता था।

भगवान बुद्ध के समय में भी राजगृह अथवा राजगीर का नाम परिवर्तन हुआ । राजगृह के उस समय के नरेश बिंबिसार ने अपने शासनकाल में पहाड़ियों से बाहर एक नया नगर बसाया यह नया नगर अपने निर्माता बिंबिसार के नाम पर बिंबिसार पूरी कहलाने लगा । जैन ग्रंथ में बतलाया गया है कि जिस स्थान पर यह नया नगर बसाया गया वहां पहले चना की काफी उपज होती थी आते हो उसे स्थान का नया नाम जनकपुर भी कहलाता था।[3]

भगवान बुद्ध के समय राजगृह नगर धन–धन से परिपूर्ण था तात्कालिक भारत के अन्य प्रमुख नगरों में चंपा ,काशी, कौशांबी, साकेत तथा श्रावस्ती थे। इन सभी नगरों के साथ राजगृह का व्यापारिक संबंध था इन नगरों के व्यापारी अपने समानों के साथ राजगृह आते थे और अपने समानों को बेचकर वापस जाने के क्रम में सामान खरीद कर अपने–अपने नगर में आते थे । राजगृह के व्यवसायी भी अन्य नगरों में जाकर व्यापार संबंधी कार्य करते थे। अधिकतर व्यापार जल मार्ग से ही किया जाता था । स्थल मार्ग के द्वारा भी व्यापार था । वैशाली के वज्जी संघ के साथ भी राजगृह का व्यापार होता था। गंगा नदी के आधे भाग पर वज्जी संघ के अधिकार था और आधे भाग में मगध का। गंगा नदी के रास्ते से जो व्यापारी आते थे ,उन्हें सौदा करने के लिए वैशाली तथा राजगृह के व्यापारी में होड़ लगी रहती थी । क्योंकि गंगा नदी से वैशाली की दूरी राजगिरी की अपेक्षा कम पड़ती थी इस कारण गंगा नदी से वैशाली का व्यापारी जल्दी बाहर के व्यापारियों से सौदा तय कर लेते थे । इस कारण राजगृह की व्यापारी को नुकसान पहुंचा था। शायद यही कारण था कि जिसके लिए राजगृह नरेश आजाद शत्रु ने वैशाली पर आक्रमण किया तथा समूल नाश कर डाला फलस्वरुप राजगृह को व्यापार में अधिक लाभ होने लगा।[4]

बुद्ध कालीन राजगृह में कई प्रसिद्ध नगर श्रेष्ठि अथवा नगर श्रेष्ठ जो अपनी धन संपत्ति के कारण पूरे देश में प्रसिद्ध थे। उसे समय किसी भी राज्य के वैभव को आंकने के लिए एक मापदंड यह भी था कि किस राज्य में कितने नगर सेठ रहते हैं मगध की राजधानी राजगृह में जितने नगर सेठ थे उतने नगर सेठ उसे समय अन्य किसी जनपद में नहीं थे श्रावस्ती के प्रसिद्ध नगर सेठ अनाथपिडक अथवा 'अनाथपिंडक' की ससुराल राजगृह में ही था। इन नगट सेठों का राजगृह की राज्यसभा में काफी सम्मान दिया जाता था तथा वह नगर सेठ भी समय पड़ने पर अपने धन से राज्य आज की सहायता किया करते थे राजगृह के नगर सेठों के भवन भी लगभग राजाओं के निवास स्थान राजा के समान होते थे।[5]

सांसारिक वैभव के अतिरिक्त राजगृह का प्राकृतिक वैभव भी कुछ काम नहीं था प्राकृतिक की ओर से तो राजगृह को मानो मुंह मांगा वरदान मिला था । यहां की पर्वत श्रेणियां गिरिकंदराएं, हरे भरे वन ,कल कल विवाद करती वनगंगा, गर्म झरने आदि ऐसे प्राकृतिक वैभव राजगृह के पास थे, जिन्हें ना तो कोई छीन कर ले जा सकता था और ना ही नष्ट कर सकता था। वास्तव में राजगृह के लिए प्राकृतिक वैभव उसके सांसारिक वैभव से कहीं अधिक महत्वपूर्ण स्थान रखते थे।

राजगृह का सांस्कृतिक वैभव भी काफी महत्वपूर्ण था उसे समय सोलह जनपदों में संभवतः राजगृह ही एक ऐसा स्थान था जहां विभिन्न धर्मो के आचार्य ने अस्थाई रूप से निवास करते थे और अपने उपदेशामृत से राजगृह के कण कण को एक नई प्रेरणा और ज्ञान प्रदान करते रहते थे भगवान बुद्ध और भगवान महावीर ने भी अपना अधिकांश समय राजगृह में ही बिताया था। जिन अन्य धर्माचार्यों का स्थाई निवास राजगृह में था, उनके नाम थे पूर्णाकाश्यप, मक्खलि गोसाल अजीत केशकम्बल, प्रबुद्ध कात्यायन, निगण्ठनाथपुत्त और संजय बेलटिठपुत्त। राजगृह में बात करने वाले इन धर्माचार्य को मान्यता सोलह जनपदों में थी और जनसाधारण के अतिरिक्त कई राजा भी उनके शिष्य थे।[6]

विभिन्न कलाओं के क्षेत्र में भी राजगृह का स्थान महत्वपूर्ण था नृत्य, संगीत और नाटक के कलाकारों के अतिरिक्त विभिन्न पैसों के लोग भी वहां निवास करते थे।[7]

इस प्रकार हम पाते हैं कि बुद्ध कालीन राजगिरी का अतीत कल बड़ा गौरवपूर्ण था और सांसारिक वैभव के अतिरिक्त इस स्थान के प्राकृतिक और सांस्कृतिक वैभव भी अद्वितीय थी।

अधिकतर धर्म ग्रंथो में ऐसे वर्णन है कि योग सिद्ध तथा तपस्या करने के लिए सन्यासियों तथा महात्माओं ने पहाड़ पहाड़ियों तथा कन्दराओं की शरण ली है इसका एकमात्र कारण संभवतः यही रहा होगा कि ऐसे स्थान पर शहरों के कोलाहल से दूर रहते थे पहाड़ पहाड़ियां तथा कन्दराओं में जिस प्रकार की शांति उन्हें मिलती होगी वैसे उन्हें अन्यत्र नहीं मिल पाती होगी।[11] सन्यासी और तपस्वियों के लिए प्राचीन काल में राजगृह शब्द इसी कारण प्रिय स्थान रहा होगा । सुत्तपिटक के सामञ्ञफलसुत्त में वर्णन किया है कि मगध सम्राट बिंबिसार तथा अजातशत्रु के शासनकाल में छह विभिन्न धर्मो के आचार्य राजगृह में अलग–अलग स्थान पर रहते थे और अपने शिष्यों को अपने माँ के अनुसार शिक्षा देते थे यह धर्माचार्य अधिकतर राजगृह अर्थात राजगीर की पहाड़ियों तथा कन्दराओं में अथवा उनके आसपास ही रहते थे।[8]

पालि साहित्य में अधिकतर स्थानों पर राजगीर की पहाड़ियों के वर्णन आए हैं यह है गृद्धकूट, वैभार पांडिवगिरि और इसीगिली। विभिन्न धर्म ग्रंथो में कई पहाड़ियों के नाम कुछ बदले हुए हैं।[9]

गृद्धकूट :

गृद्धकूट पहाड़ियों का वर्णन बहुत ग्रंथ तथा इतिहास में अनेक बार आया है भगवान बुद्ध को यह पहाड़ी अत्यधिक प्रिय थीं। बुद्ध को राजगृह स्थित गौतमन्यग्रोथ, चौर–प्रयात , सप्तपर्णी गुफा, कालशिला, सत्तसौनिदक प्रभार, कलंदक निकाय तथा अमरावती का अध्याय स्थान प्रिय थे ही, पर इन सबसे अधिक प्रिय उनके लिए गृद्धकूट पर्वत था। इसके ऊपर बैठकर उन्होंने कई प्रसिद्ध सूत्तों को अपनी शिष्टमंडली के बीच कहा था। एक बार जब वह इसी तलहट्टी पर शांत भाव में घूम रहे थे तो उनके प्रतिस्पर्धा रखने वाले देवदत्त ने पर्वत पर एक शिलाखंड को ऊपर से इस तरह फेंक की बुद्ध उसे पर दबकर मर जाते निशान थोड़ा सा चूक गया। बुद्ध शिलाखंड से दबकर मरे तो नहीं पर उनके पैर में थोड़ी चोट जरूर आई जिससे राजवैद्य जीवक ने अच्छा किया था।[7]

वैभार पहाड़ी :

पालि साहित्य में बताया गया है कि वैभार पहाड़ी गर्म झरने के पास से लेकर प्राचीन गिरिराज तक फैली हुई थी । प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान बुद्ध घोष के अनुसार प्राचीन तपोदा नदी का उद्गम इसी पहाड़ी से हुआ था। सुत्तपिटक पिटक और विनय पिटक में कई स्थलों पर वैभार का वर्णन किया गया है और बताया गया है कि सप्तपर्णी गुफा वैभार पहाड़ के अंतर्गत थी। इसी सप्तपर्णी गुफा में भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद बौद्ध अर्हतों की प्रथम ऐतिहासिक संगीति महास्थिविर महाकश्यप की अध्यक्षता में हुई थी ,जिसमें पाँच सौ चुने हुए अर्हतों ने भाग लिया था।[11] इसी वैभार पहाड़ी की सप्तपर्णी गुफा में सुत्तपिटक पिटक और विनय पिटक को स्थिरता प्रदान की गई थी और संगायन किया गया था। यह संगीति लगभग एक महीने तक चलती रही थी । तत्कालीन मगध सम्राट अजातशत्रु ने अर्हतों के रहने तथा अन्य आवश्यक व्यवस्था करवाई थी । वैभार पहाड़ी में सत्यपर्णी गुफा कहां पर है इसमें विद्वानों का मतभेद है पर सत्य है कि वैभार पहाड़ी के अंचल में ही है। वैभार गिरी के अंचल में अवस्थित दूसरी गुफा पिपली गुफा के नाम से प्रसिद्ध है कहा जाता है कि बुद्ध के प्रधान शिष्य महास्थिविर महाकाश्यप यादा कदा इस गुफा में निवास करते थे। महाकश्यप का पहला नाम पिपली था अतएव हो सकता है कि उन्हीं के नाम पर इस गुफा का नामांकरण पिपली गुफा किया गया हो। गर्भ झरने के पास थोड़ी चढ़ाई पर इस पहाड़ी में थोड़ा समतल जगह है। कहा जाता है कि यह स्थान जरासंध की बैठक था संभवत मगध सम्राट जरासंध अपने अवकाश के क्षणों में प्राकृतिक का मुक्त आनंद प्राप्त करने के लिए यहां आकर बैठते होंगे।[8]

बिपुलाचल :

खुद्दक निकाय के एक ग्रंथ में बताया गया है कि विपुलाचल पहाड़ी गृद्धकूट की उत्तर दिशा में अवस्थित है। इसके बारे में एक जनश्रुति है कि कभी यह पहाड़ी काफी ऊंची और विशाल थी पर धीरे–धीरे इसका आकार कम होता गया फिर भी राजगृह की पहाड़ियों में यह सबसे ऊंची पहाड़ी है संयुक्त निकाय में इसकी विशालता का वर्णन इस वाक्य में किया गया है कि "अक्खतो वेपपुलो पब्बतो महा"।

पांडवागिरी :

पांडवागिरी का वर्णन पालि साहित्य के सूतनिपात में आया है। बताया गया है कि जब कपिलवस्तु के राजकुमार गौतम ने राज पाट तथा सगे संबंधियों को छोड़कर महाभिनिष्क्रमण किया तो घूमते फिरते वे राजगृह भी पधारे। ज्ञान की खोज करने वाले त्यागी गौतम जब राजगृह नगरों में भिक्षाटन कर रहे थे तो तत्कालीन मगध सम्राट बिंबिसार ने उन्हें दूर से देखा और उनके अलौकिक

व्यक्तित्व से बड़े प्रभावित हुए उन्होंने उसे राजकुमार को बुलाकर वार्तालाप करना चाहा, पर गौतम राज प्रसाद में नहीं गए। वह अपने निवास स्थान पांडवागिरि की और बढ़ चले। सम्राट बिंबिसार ने स्वयं पांडवा गिरि जाकर उसे राजकुमार से भेंट की । इस प्रकार हम पाते हैं कि उसे समय के महान सम्राट बिंबिसार और महान भावी धार्मिक व्यक्ति गौतम के प्रथम साक्षात्कार का स्थल होने का सौभाग्य पांडवागिरी को ही प्राप्त हुआ। वहां सम्राट ने गौतम को काफी समझाया और संन्यास का मार्ग छोड़ने की सलाह दी अपने सम्राट ने आधा राज देना चाहा पर गौतम अपने विषय पर अटल रहे । अंत में सम्राट बिंबिसार ने गौतम से निवेदन किया कि बुद्धत्व की प्राप्ति के बाद वे राजगृह अवश्य पधारे। गौतम ने सम्राट बिंबिसार का यह अनुरोध स्वीकार कर लिया।[9] पांडव गिरी की पहचान तथा उनके नाम के बारे में विद्वानों का मत है कि पांडवागिरी को ही आजकल रत्नागिरी के नाम से भी पुकारा जाता है।[10] इस पहाड़ी का नाम पांडवा गिरी क्यों पड़ा इसके बारे में एक जान श्रुति यह है कि महाभारत की लड़ाई के पहले जब कृष्ण भीमसेन तथा अर्जुन के साथ लेकर छदमवेश में राजगृह की ओर चले तो मुख्य नगर द्वारा से प्रवेश नहीं कर पा सके। तत्कालीन मगध सम्राट जरासंध को ललकारने तथा मारने के लिए राजगृह में प्रवेश करना आवश्यक था अतएव श्री कृष्ण ,अर्जुन और भीम को साथ लेकर इस पहाड़ी के पास पहुंचे और इस पार कर वे राजगृह में प्रवेश कर सके। संभवतः पांडव बंधुओं के इस पहाड़ी पर पदार्पण के कारण ही इस पहाड़ी का नाम पांडव गिरी पड़ा हो।

इसीगिली :

इसीगिली राजगृह की पांचो पहाड़ियों में इसीगिली का प्राकृतिक सौंदर्य सबसे अधिक माना जाता है। इसिगिली सूत्र मैं बताया गया है कि इसीगिली पहाड़ी का नाम परिवर्तन बहुत कम हुआ है हिंदू धर्म ग्रंथो में इसे ऋषि गिरी भी कहा गया है । कारण यह था की पहाड़ी के अंचल में अनेक ऋषि मुनि रहा करते थे और अपनी साधना करते थे। क्योंकि यह पहाड़ी और पहाड़ियों की अपेक्षा ज्यादा सुनसान रहा करती थी अतएव कई ऋषिगण इस पर वास करते हुए अचानक ही काल के गाल में समा गए थे।

इस पहाड़ी के अंचल में एक काला शिलाखंड था जो कि बौद्ध ग्रंथों में शिलाखंड के नाम से प्रसिद्ध था । भगवान बुद्ध को यह कालशीला अत्यधिक प्रिय तथा रमणीय लगती थी अपने राजगृह प्रवास के समय वे याद काल शीला के पास आकर बैठा करते थे और योग दर्शन की बातें सोच करते थे । बताया जाता है कि जैन श्रावक भी इस एकांत स्थल पर आकर अपने धर्म के अनुसार कर्म करते थे।

यह पहाड़ी सुनसान थी और इसके ऊपर की कालशिला तो और भी सुनसान रहती थी अतएव आत्महत्या करने वाले व्यक्ति वहां जाकर आत्महत्या भी करते थे। मगध सम्राट की ओर से जिन्हें प्राण दंड की सजा दी जाती थी वे सैनिक से घिरे हुए यहीं लाये जाते थे और प्राण दंड की आज्ञा कार्यान्वित की जाती थी । चीनी यात्री ह्वेनसांग तथा फाहियान ने भी इसी गिली पहाड़ी और कालशिला का वर्णन अपने यात्रा वृतांत में किया है।

प्राचीन राजगृह की गुफाएं :

प्रायः सभी धर्म में पाया गया है कि अधिकांश तपस्वियों और संन्यासियों ने अपने साधना काल में गुफाओं में रहना पसंद किया है। संभवत कारण यह रहा होगा कि इन गुफाओं में जिस प्रकार का शांत वातावरण मिलता होगा वैसा वातावरण अनंत्य कहीं नहीं मिलता होगा ।दूसरा कारण यह भी रहा होगा कि उन साधकों को प्रकृति द्वारा बना बनाया आश्रम मिलता होगा उन गुफाओं में निवास करने वाले शरद ऋतु में जाड़े में ग्रीष्म ऋतु में गर्मी में तथा ग्रीष्म ऋतु में मूसलाधार वर्षा से उन्हें विशेष कष्ट नहीं होता होगा । तीसरा कारण यह था कि जंगली जानवरों से भी उनकी रक्षा बहुत हद तक हो जाती होगी यह गुफाएं अधिकतर पहाड़ों और पहाड़ियों के अंचल में ही स्थिति रहती थी।[11]

पालि साहित्य में वर्णन किया है कि प्राचीन राजगीर पांच पहाड़ियों से घिरा था। इन पहाड़ियों के नाम गृद्धकूट, इसीगिली, कालशिला, वैभार, पांडवागिरी, विपुलाचलपंडवा तथा आइसोगिनी पर प्रकाश डाला गया । इन पहाड़ियों के अंचल में कुछ गुफाएं भी थी। बुद्ध कालीन राजगृह की कुछ प्रसिद्ध गुफाओं के नाम इस प्रकार है सप्तपर्णी गुफा, पिप्पला गुफा, इंदूशाल गुफा, कपोत गुफा ,हिंदुस्तान गुफा , गौतम कंदरा आदि। अर्वाचीन कॉल में इन गुफाओं को की सही स्थिति के बारे में विद्वानों के मत भिन्न–भिन्न है।[12]

संदर्भ ग्रंथ :

1. वर्थ , पृ0 40.41
2. कैम्ब्रिज पृ0 1–150
3. दीर्घ निकाय पृ0 47–49 मज्झिम निकाय पृ0 198.250 सुत्तनिपात 3/6.4 महावग्ग 1ध्5ध्7
4. महावग्ग 1/6/10.29 आचार्य नरेंद्र देव बौद्ध धर्म दर्शन पृ0 5
5. महावग्ग 1ध्7
6. वही 1ध्9
7. वही 1ध्10
8. आचार्य नरेंद्र देव बौद्ध धर्म दर्शन पृ0 9
9. महावग्ग 1ध्15ध्1
10. वही 1/20/17–24
11. वही 1/21–22
12. वही 1/22